आज की मुरली का सार Date: 05-06-2014

बाबा ने कहा, यही सत्य नारायण की सच्ची-सच्ची कथा हैं, आगे जन्म-जन्मांतर हमने सत्य नारायण की कथा तो बहुत सुनी हैं परन्तु वह कोई सच्ची कथाएँ नहीं हैं. ज्ञान सागर, सत्य शिव बाबा ने आज की मुरली में हमें कई ऐसी बातें बताई हैं जो हम आगे भक्ति-मार्ग में कभी नहीं समझे थे.

- भक्ति में गाया हुआ हैं - मनुष्य से देवता करत न लागी वार. ज्ञान में हम समझे की जब तक मनुष्य, ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण न बने तब तक देवता बन नहीं सकते. तो मनुष्य से ब्राह्मण और ब्राह्मण से देवता, एक ईश्वर ही इस संगमयुग पर आकर बनाते हैं.

- भक्ति में हम कई सतसंगो में भटकते हैं, कोई भी ऐम ऑबजेक्ट नहीं होती हैं और ही धन-दौलत आदि सब कुछ गंवा कर भटकते रहते हैं. ज्ञान में हम एक सत्य बाप के साथ सच्चा सतसंग करते हैं. बाप ही फिर टीचर बन कर सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं. यहाँ हम जीतना पढ़ कर धारण करते हैं उतना हम अपना भाग्य उच बनाते हैं. इसलिए बाप कहते हैं इस ज्ञान के सतसंग में आना माना फायदा ही फायदा.

- भक्ति में हम पुरषोतम मास मनाते थे, लेकिन समझते नहीं थे की पुरषोतम का मतलब क्या हैं और पुरषोतम मास क्यों मनाया जाता हैं. बाबा ने ज्ञान में हमें समझाया की पुरुष यानी आत्मा और इस संगमयुग को ही पुरषोतम युग कहा जाता हैं की जब स्वयं भगवान आकर ज्ञान और योग सिखलाकर पतित आत्माओं को पुरषोतम (उतम पुरुष माना पावन आत्मा) बनाते हैं.

- भक्ति में ब्रह्म को ही हम ईश्वर समझते हैं, लेकिन बाप ने समझाया की ब्रह्म तत्व तो हम सब आत्माओं के रहने का स्थान हैं जहॉ ज्योति स्वरूप स्टार मिसल आत्मायें एक उलटे कल्प वृक्ष के रुप में रहती हैं. जिसमें सबसे ऊपर बिजरूप परमपिता-परमात्मा शिवबाबा हैं.

- भक्ति में हम स्वयं को आदि सनातन हिन्दू धर्म के मानते हैं. ज्ञान में हमने समझा की असूल में हम आदि सनातन दैवी-देवता धर्म के हैं. लेकिन आत्माये पतित होने से स्वयं को दैवी-देवता कहला नहीं सकते. बाबा ने बताया की ये हिन्दुस्तान नाम भी फॉरेनर्स ने रखा हैं, असूल नाम भारत हैं.

- भक्ति में हमने निराकार नाम तो सुना था लेकिन निराकार का सही अर्थ बाबा ने बताया की कैसे हम सब निराकार आत्मायें परमधाम में बाबा के साथ रहती हैं और फिर नम्बरवार पाठ बजाने नीचे आते हैं. परमपिता-परमात्मा शिवबाबा भी निराकार और हम आत्माये भी निराकार हैं.

- भक्ति में विष्णु, कृष्ण और नारायण का चित्र अलग हैं लेकिन तीनों को स्वदर्शन चक्र के साथ दिखाते हैं. और स्वदर्शन चक्र को एक हथियार के रुप में जिसे देवताये भी हिंसा करते बताते हैं. अब ज्ञान में बाबा ने हमें स्वदर्शन चक्र की सही समझ दी की कैसे हम ब्राह्मण आत्मायें इस संगमयुग पर, स्वदर्शन चक्र को फिराकर , यानी आत्मा के आदि-मध्य-अन्त के पार्ट को याद कर माया के ऊपर विजय प्राप्त करती हैं. और ब्राह्मण से देवता बनती हैं. इसे ही भक्ति-मार्ग में स्वदर्शन चक्र को हथियार के रूप में राक्षसों (माया) का वध करते दिखाया हैं. बाबा ने कहा जितना हमारा यह ज्ञान का स्वदर्शन चक्र फिरेगा उतने हमारे पाप भस्म होगे.

- भक्ति में हम भगवान को भी ठिक्कर-भीतर में, कण-कण में समझते हैं. बाबा ने कहा ये तो बाप की कितनी ग्लानि कर दी हैं की सत्य-चैतन्य-आनंद स्वरूप भगवान को ठिक्कर-भीतर में कह दिया हैं. मनुष्य आत्माओं की भी इतनी ग्लानि नहीं की हैं, आत्मा को आत्मा ही कहते हैं.

अन्त में बाबा ने कहा, मनुष्य कितना अंधियारे में हैं इसलिए कहा जाता हैं ज्ञान-सूर्य प्रगटा, अज्ञान-अंधेर विनाश.

बाबा के ज्ञान से हमें कितनी रोशनी मिली हैं. मन ही मन आत्मा गाती हैं शुक्रिया बाबा तेरा लाख-लाख शुक्रिया.